दस पैसे की सुपारी

संस्मरण

श्रीमती शैलजा सोनवानी

जहां तक मुझे याद है, उस समय मेरी आयु १२ वर्ष की थी। हम सब एक ही कोलोनी में रहा करते थे। हमारी कोलोनी में ढेर सारे बच्चे थे। इन सारे बच्चों में करीब २१ लड़के थे। इनमें से दो मेरे बड़े भाई थे, और मुझको मिलाकर केवल तीन लड़कियां थीं। हम सब ही बच्चों की उम्र में दो से चार वर्ष का अन्तर था। हम सब ही बच्चे शाम को स्कूल के बाद कोलोनी के मैदान में एक साथ मिलकर खेला करते थे। उनमें से एक लड़का था राजू, जो हमारी ही कोलोनी में रहता था और वह मुझको बिल्कुल भी पसंद नहीं था। उसका मेरी ओर देखने का अंदाज़, मुझसे मेरी सहमति न होते हुये भी जबरन मुझसे बातें करना या बात करने की कोशिश करना और उसका मेरे साथ खेलना मुझे कतई पसंद नहीं था। उसकी आदतें देखकर मुझे उस पर बहुत गुस्सा आता था। उसे भी मालुम था कि मैं उसे पसंद नहीं करती हूं, लेकिन वह ऐसा था कि जहां मैं होती थी वह वहीं पहुंच जाता था।

एक दिन की बात है। सभी बच्चे मैदान में खेलने को आये। उस समय मेरी अन्य दो सहेलियां और वह लड़का वहां पर नहीं थे। साथ ही मेरे दोनों बड़े भाई भी वहां पर नहीं थे। वह मेरे दोनों भाइयों के साथ था। उस समय १८ लड़कों के साथ में मैं अकेली एक लड़की थी और हम सब बाकी मित्रों का वहां पर आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। तभी एक लड़के ने पूछा,

''राजू, आज कैसे खेलने नहीं आया? वह तो सबसे पहले ग्राऊंड में पहुंचता है?''

''अच्छा ही हुआ है, वह खेलने नहीं आया।'' मैं तुरन्त ही बोली तो वह लड़का मुझसे तुरन्त ही बोला,
''ऐसा क्यों बोल रही हो?''
''वह मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं है। अब हम उसे अपने साथ नहीं खिलायेंगे।'' मेरा एक टूक कड़ा जबाब सुनकर वह लड़का चुप हो गया।

उसी समय मेरे दिमाग में राजू को सबक सिखाने के लिये एक उपाय आया। मैं सब लड़कों से बोली,
''तुम सब लड़के मिलकर राजू की पिटाई करना। फिर वह कभी भी हमारे साथ खेलने नहीं आयेगा। यदि तुम सब ऐसा करोगे तो मैं तुम सबको दस-दस पैसे सुपारी के लिये दूंगी।''

मेरा इतना कहना भर था कि वे १८ लड़के केवल दस पैसे की सुपारी में राजू की पिटाई करने के लिये तैयार हो गये। उस समय हमारी कोलोनी में एक टूटा हुआ मकान था, जिसमें कोई भी नहीं रहता था और हम सब उसे भूत बंगला कहा करते थे। मैंने उन लड़कों को सलाह दी- जब राजू कल खेलने आये तो तुम सब उसे भूत बंगले में ले जाकर वहां उसकी खूब पिटाई करना तब वह कभी भी हमारे साथ खेलने नहीं आयेगा। उन दिनों में मेरे पापा मुझे रोज़ १० पैसे मूंगफली खाने के लिये देते थे। हमारे स्कूल के सामने एक स्त्री जो वयोवृद्धा थी, मूंगफली बेचा करती थी। मैं उससे हर दिन ही १० पैसे की मूंगफलियां लेकर खाया करती थी।

फिर दूसरे दिन मेरी योजना के अनुसार वे १८ लड़के राजू को पकड़कर भूत बंगले में ले गये और उसे वहां ले जाकर उसकी खूब ही पिटाई की। सब ही उसको बुरी तरह से पीट रहे थे, और वह चिल्ला-चिल्लाकर कह रह रहा था कि, 'मुझे क्यों मार रहे हो? मैंने तो कुछ किया ही नहीं है। मैं तुम्हारा मित्र हूं। मुझे मत मारो?' लेकिन उसकी याचना को किसी ने नहीं सुना, और सब उसे मारते पीटते रहे। फिर कुछ देर के पश्चात सारे लड़के अपना काम करके वहां से चले गये पर, एक छोटा

लड़का वहां पर रूका रहा। उस छोटे लड़के ने राजू को बता दिया कि उसकी पिटाई करने के लिये शैलजा ने सब लड़कों को दस-दस पैसे की सुपारी में खरीदा था, और उन सबको सुपारी दी है।

दूसरे दिन सारे बच्चे फिर एक बार खेलने के लिये मैदान में एकत्रित हुये, लेकिन राजू वहां पर नहीं आया। मैं यह देखकर मन ही मन बहुत ही खुश हो रही थी कि अब राजू वहां खेलने के लिये नहीं आयेगा। सब लड़कों ने इशारे में ही मुझे बता दिया था कि उन्होंने मेरा काम कर दिया है। राजू चूंकि मेरे बड़े भाई का दोस्त था और वह नहीं आया था, तो मेरे भाई कुछ देर बाद राजू को बुलाने उसके घर चले गये। उसी समय अन्य बच्चे भी अपने अपने घर चले गये।

फिर जब मेरे भाई ने राजू को उसके घर में देखा तो उसकी दशा देखकर दंग रह गये। राजू का चेहरा बुरी तरह से सूजा हुआ था। हाथ और पैरों में भी उसके चोटों के निशान थे। फिर जब मेरे भाई ने उसकी ऐसी दशा का कारण पूछा तो राजू ने सारी बात उन्हें बता दी। लेकिन उसकी बात सुनकर मेरे भाई को विश्वास नहीं हो पा रहा था कि मैं ऐसा भी कर सकती हूं। वे राजू से बोले, 'नहीं, मेरी बहन कभी भी ऐसा नहीं कर सकती है। वह तो अभी बहुत छोटी है। उसे यह सब कुछ भी नहीं मालुम है। वह ऐसा नहीं कर सकती है। लेकिन जब राजू ने उस छोटे लड़के का हवाला दिया तो उन्हें भी राजू की बात पर विश्वास हो गया। वे जानते थे कि वह छोटा नादान लड़का कभी भी झूठ नहीं बोलता था और बहुत ही ईमानदार था।

मेरे भाई का गुस्सा अब सातवें आसमान पर था। वे एक छड़ी लिये हुये घर आये और बगैर कुछ भी कहे हुये मेरी पिटाई करने लगे। मेरी मम्मी ने जब उन्हें मुझे छड़ी से मारते हुये देखा तो वह उन्हें मारने से रोकने लगी, और पूछा कि, 'बच्ची को क्यों मारता है? इसने ऐसा क्या किया है जो तू उसे छड़ी से मार रहा है?'

''यह बच्ची नहीं है। यह हमारी कोलोनी की बहुत बड़ी सरगना और मास्टर माइंड है।''
''क्या बकवास करता है? सीधी-सीधी बात कर। इसने ऐसा क्या किया है?''

उत्तर में तब मेरे भाई ने उन्हें सारी बात बता दी। लेकिन मेरी मां को यह सुनकर विश्वास नहीं हुआ। वे मेरे भाई से बोलीं,
''मैं नहीं मानती। यह ऐसा नहीं कर सकती है।'' और जब उन्होंने मुझसे पूछा तो मैंने भय के कारण तुरन्त ही झूठ बोल दिया कि मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया है। तब मेरे भैय्या ने उनसे कहा कि, 'ठीक है। कल जब सारे लड़के एकत्रित होंगे और वह छोटा लड़का भी होगा तो मैं सबको बुलाकर पूछूंगा और उस छोटे लड़के से भी। तब सारी सच्चाई सामने आ जायेगी।'

अपने भाई के मुख से यह सब बातें सुनकर तब मैं पहले से भी अधिक डर गई थी। उस समय मुझे ऐसा लग रहा था कि दुनियां की सबसे बड़ी अपराधिनी केवल मैं ही हूं, और मुझे मौत की सजा होने वाली है। मैं सोचती थी कि कल जब सच्चाई सबके सामने खुलेगी तो लोग क्या कहेगें और मेरे बारे में क्या समझेंगे? मेरी मम्मी और मेरे पापा को सब कुछ पता चल जायेगा। मेरे मित्र भी मेरा साथ छोड़ देंगे। हो सकता है कि घर में सब मुझे मारेंगे भी। अब मेरा क्या होगा...? यह सब सोचते हुये मेरा बुरा हाल था। उस समय मुझे मेरी गलती का एहसास हो रहा था। मैं सोचने लगी कि सचमुच मैंने गलत किया था। राजू मुझे पसंद नहीं था। उसकी आदतें मुझे नहीं भाती थीं लेकिन तौभी उससे बदला लेने का मुझे क्या अधिकार था? बदला लेना तो केवल परमेश्वर का काम है। मैं मन ही मन मनाने लगी कि यह रात कभी भी समाप्त न हो और कल की सुबह कभी भी न आये। मेरा झूठ पकड़ा न जाये। मैं ऐसा सोचती तो थी लेकिन मुझे अपने आपको बचा लेने का कोई भी रास्ता नज़र नहीं आ रहा था। लेकिन मैं यह भी जानती थी कि कल जब वह छोटा

लड़का सबके सामने मेरी सच्चाई खोलने वाला है। वहां पर तो सब ही होंगे। उन सबके सामने मैं एक मुज़रिम होऊंगी, और तब मैं सबसे बुरी लड़की कहलाऊंगी। इस तरह के न जाने कितने ही सवाल मेरे मस्तिष्क में उबल रहे थे। फिर यह सोचते हुये कि कल की सुबह फिर कभी न आये सेकिण्ड मिनटों में, और मिनटें घंटों में बदलने लगे। यह सब देखते हुये जब मेरी आंख खुली तो सुबह की कोमल रश्मियां जैसे मेरी बेबसी और लाचारी पर मुझे अपना अंगूठा चिढ़ा रही थीं। उस सुबह की धूप मुझे ऐसी लगी जैसे कि वह भी मुझ पर हंस रही थी। जैसे कह रही थी कि, 'अब तेरा क्या होगा? कौन तुझे बचायेगा?' मुझे उस सुबह पर एक बार को गुस्सा भी बहुत आया था कि, इसे आने की क्या जल्दी थी? मुझे एहसास हो हो रहा था कि वह सुबह की रोशनी मानो मेरे जीवन का अंधेरा लेकर आई हो। सुबह उठकर स्कूल जाने की तैयारी करने लगी। घर के बाकी सदस्य अपने-अपने कामों में व्यस्त थे, और मेरे हृदय की उथल-पुथल समझने वाला कोई नहीं था।

मैं एक मसीही विश्वासी परिवार से थी। मेरे मम्मी-पापा दोनों ही सरकारी नौकरियों में थे। पापा बैंक में काम किया करते थे। वे अब तो इस दुनियां में नहीं हैं, पर वे बहुत ही अधिक सिद्धान्तवादी पुरूष थे। उनके अपने जीवन के कुछ सिद्धान्त थे, जो बहुत अच्छे थे। उनके उन सिद्धान्तों का मेरे जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। मेरी मां एक विश्वासी और प्रार्थना करनेवाली स्त्री हैं। मैं उन्हें बचपन से हरेक छोटी से छोटी बात में प्रभु पर भरोसा रखते और प्रार्थना करते हुये देखा करती थी।

मुझे स्कूल जाना था। मैं नहाने के लिये स्नान के कमरे में गई और वहां जाकर कुछेक मिनट खड़ी रही। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि करूं तो क्या करूं? बीती रात की तरह लग रहा था कि सुबह तो हो गई लेकिन अब कभी भी शाम न हो। बच्चे भी मैदान में न आयें। इससे आगे मेरे लिये कुछ अन्य सोच पाना भी नामुमकिन था। लगता था कि जैसे मेरे मस्तिष्क ने अपना

सारा काम करना बंद कर दिया है। अब मेरे पास केवल एक ही रास्ता रह गया था कि मैं अपनी इस परेशानी को अपने प्रभु यीशु मसीह को बताऊं और फिर उस छोटे स्नान के कमरे में, मैं घूटने टेक कर प्रार्थना करने लगी। और प्रार्थना करने के लिये भी मेरे पास केवल एक ही शब्द थाः प्रभु मुझे बचा। मुझे नहीं पता है कि कैसे? लेकिन मैं जानती हूं कि तू कुछ कर सकता है। मुझे इस समस्या से बचा। फिर जो तू चाहेगा वह मैं करूंगी। तू यदि चाहेगा तो मैं तेरी सेवा करूंगी। लेकिन तू मुझे अभी इस दुख से निकाल। मैं मानती हूं कि मैंने गल्ती की है, मैं क्षमा मांगती हूं। अब ऐसी गल्ती फिर नहीं करूंगी। बस एक बार मुझे बचा ले। मेरी उस समय की उम्र के हिसाब से तब वह प्रार्थना मैंने सच्चे दिल से की थी।

फिर मैं स्कूल चली गई। उस दिन मैंने कुछ भी नहीं खाया। ना तो सुबह का नाश्ता और ना ही दोपहर का खाना। ऐसा लग रहा था कि भोजन क्या है? भूख भी क्या चीज़ होती है? मुझे कुछ पता ही नहीं था। मैं नहीं जानती थी कि उस दिन मेरा स्कूल में भी मन लगा था या नहीं। देखते-देखते शाम हो गई। स्कूल की भी छुट्टी हो गई। सारे बच्चे घर चले गये। सारा स्कूल खाली हो गया। स्कूल का चपरासी मुझे स्कूल से बाहर ले गया और उसने स्कूल का गेट बंद कर दिया। स्कूल के बाहर भी मैं अनाथ सी अकेली खड़ी रह गई। मुझे ऐसा लगने लगा था जैसे मेरा अब कोई भी नहीं है, जो मेरी परिस्थति और परेशानी को भली-भांति समझ सके। मैं आधे घंटे देर से घर पहुंची। तब तक सारे बच्चे खेलने के लिये मैदान में खड़े हो चुके थे। मुझे देखते ही मेरे एक मित्र ने दूर से ही आवाज़ लगाई, बैग रखकर जल्दी से आना। उसकी यह बात सुनकर मेरी धड़कन और तेज हो गई। ऐसा लग रहा था कि जैसे मेरी सज़ा का वक्त आ गया है और मुझे मौत की सज़ा मिलने वाली है।

मैं घर गई। मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा था। चुपचाप पलंग पर बैठ गई। तभी मेरी सहेली बुलाने आ

गई। मुझे परेशान और चुप देखते हुये एक संशय से बोली,

''तेरी तबियत तो ठीक है न? तू आज ख़ामोश क्यों है? खेलने क्यों नहीं आई?'' मेरी इस बदली हुई मनोदशा से कहीं मेरा झूठ न पकड़ा जाये, इसलिये मैं उठी और उससे बोली,

''तू दो मिनट रूक। मैं कपड़े चैंज करके आती हूं।'' और फिर बाद में चुपचाप उसके साथ चली गई।

मैदान में पहुंची तो देखा कि वहां पर सारे बच्चे मेरा इंतज़ार कर रहे थे। वह छोटा लड़का भी वहां पर मौजूद था। उसे देखकर मेरी धड़कन पहले से भी अधिक बढ़ गई। मुझे ऐसा लगने लगा कि मेरा दिल अब फटकर मेरे शरीर से बाहर आ जायेगा। मुझे खुद भी अपने दिल की बढ़ी हुई धड़कनों की आवाज़ अपने कानों में सुनाई दे रही थी। मेरे वे भाई जो मुझे कटघरे में खड़ा कर देने वाले थे, मुझ से बोले,

''आज खेलने का इरादा नहीं था क्या?''

''?'' उनकी ऐसी बात सुनकर मैं आश्चर्य से गड़ गई। मुझे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि वे एक दम से इतने सामान्य क्यों हैं? दूसरी एक अन्य बात, राजू भी उस दिन खेलने नहीं आया था। वह इतनी बुरी तरह से ज़ख्मीं था कि उसे ठीक होने में एक सप्ताह लगा था। मेरे भाई के साथ सभी लोग मुझे बेहद सामान्य दिखे। सब ही कुछ पहले ही की तरह सामान्य था। कुछ भी तो नहीं बदला था। ऐसा लग रहा था कि जैसे किसी को भी पिछले दिन वाली घटना याद नहीं थी; ना मेरे भैय्या को, ना मस्तेरी मम्मी को, ना उन सारे खेलने आये हुये बच्चों को और ना ही उस छोटे लड़के को। बस याद था तो केवल मुझे, जो आज तक नहीं भूल पाई हूं। सब अपने घर चले गये। मैं भी अपने घर आ गई। फिर रात हुई। लेकिन मेरे मन में अब भी ये ख्याल था कि, हो सकता है कि कल फिर से ये बात उठे। हम सब ने खाना खाया और सो गये। मुझे अभी तक यह समझ में नहीं आ रहा

था कि इतनी बड़ी बात, और सब ही जैसे भूल चुके थे। किसी ने मुझसे इस बारे में कोई भी बात नहीं की थी।

तब मैंने उस दिन प्रभु को पहचाना कि सचमुच में वह निहायत ही ऐसा सच्चा ईश्वर है जो हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है। वह केवल सुनता ही नहीं है बल्कि उनका समयानुसार उत्तर भी देता है। उसने कहा है कि, चाहे तेरे पाप लाल रंग के क्यों न हों, चाहे जैसे भी हों, मैं उन्हें हिम के समान श्वेत करूंगा। और सचमुच उसने यह काम मेरे जीवन में किया है। १२ साल की उम्र में मैंने परमेश्वर को जाना कि, परमेश्वर कौन है? वह क्या कर सकता है? मेरे जीवन का यह वह पहला आश्चर्यकर्म था जो प्रभु ने मेरे साथ किया है। वह हमारे पापों को उत्तर दिशा से दक्षिण दिशा तक दूर करने में सक्षम है। वह हमारे पापों को कभी भी स्मरण न करने की बात कहते हैं। मनुष्य को सदा उसके गुनाह याद रहते हैं, लेकिन प्रभु उन्हें भूल जाता है।

उस दिन मैं समझी थी कि जहां पर सारे मार्ग बंद हो जाया करते हैं, वहीं हमारा प्रभु उन्हें एक नये तरीके से खोल दिया करता है। आज इस बात को ३८ वर्ष हो चुके हैं, लेकिन मैं समझती हूं कि अतीत की यह घटना किसी को भी याद नहीं होगी। न मेरे भाइयों को, न ही मेरी मां को और उन मित्रों को भी नहीं जो इस सारी घटना में बराबर के भागीदार थे। लेकिन यह घटना मुझे आज भी याद है। उस दिन मैं अपनी गल्ती से फंस गई थी। लेकिन प्रभु ने मेरी हरेक प्रार्थना के एक एक शब्द का उत्तर दिया। मैं अनजाने में न समझी थी, और उस समय की परिस्थिति में फंस गई थी। और तब उस स्थिति से बचने के लिये प्रभु से बोली थी कि, प्रभु यदि तू चाहेगा तो मैं तेरी सेवा करूंगी। हमारा प्रभु दयावान और प्रेम करनेवाला है। हम जो भी उससे सच्चे हृदय से मांगते हैं, वह हमें अवश्य ही देता है। मैं जानती हूं कि उस दिन से प्रभु ने मुझे अपनी सेविकाई में चुन लिया है। १६ साल की उम्र में, मैं पहली बार युवाओं के साथ प्रचार करने

गई। प्रभु यीशु सदैव ही मेरे लिये भला रहा। तब इस तरह से दिन व दिन मेरे जीवन में गवाहियां बढ़ती गईं। लोग जिसे परिश्रम करके, पैसों से, बहुत हानि उठाने के बाद भी नहीं प्राप्त कर पाते हैं, वह मुझे सहज ही मिल जाया करता है। अब मैं कभी भी अकेली नहीं हुआ करती हूं। एक स्वर्गदूत जैसे मेरे साथ-साथ होता है। मेरी वह सारी जरूरतें जो मुझे चाहिये होती हैं, वह मुझे मिल जाती हैं। आज प्रभु मुझसे हर दिन ही बातें करता है। एक दिन भी यदि मैं उसकी आवाज़ नहीं सुन पाती हूं तो मैं बेचैन हो जाया करती हूं। मुझे उसकी आदत सी हो गई है। मैं अब प्रभु की आवाज़ सुनती और पहचानती हूं।

मेरी इस गवाही के पढ़ने वाले समस्त पाठकों से अनुरोध है कि, वे अपने जीवन में प्रभु को एक बार अवश्य ही निमंत्रण दें। वह जीवित है। वह हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है। वह हमसे बातें करता है, और हमारे साथ रहना चाहता है। इस बात का मुझे हर दिन का अनुभव है। यदि प्रभु ने चाहा तो आने वाले दिनों में, मैं आगे की गवाही आप तक पहुंचाने की कोशिश करूंगी। आपकी प्रार्थनाओं की मुझे आवश्यकता है, ताकि जो काम प्रभु ने मुझे सौंपा है, उसे अवश्य ही पूरा करूं।

इस गवाही के बारे में आपके विचारों का स्वागत है। कृपया अपनी प्रतिक्रियायें निम्नलिखित पते पर भेजने का कष्ट करें

Yeshukepaas@comcast.net